वीरांगना महारानी अवंतीबाई लोधी

16.08.1831-20.03.1858

(कृपया इसका प्रिंट निकलवाकर पढ़ें और पढ़वाएं)

आभार : चंद्रभान सिंह लोधी
सुगत सांस्कृतिक, शैक्षिक एवं सामाजिक संस्था,
लखनऊ (उ.प्र.), दिनांक : 16.08.2020
अभिनेत्री : अनामिका सिंह
लेखक : ए. के. सिंह
मोबाइल : 7355175480

बंधुओं, जय संविधान, जय विज्ञान, जय भारत, नमो बुद्धाय, जय अवंती, जय भीम.....

सूत्रधार : आज हम एक ऐसी वीरांगना पर विचारों का आदान प्रदान करने जा रहे हैं, जिसको इस सभ्रांत समाज ने भुला दिया। सभ्रांत इसलिए कह रही हूं, क्योंकि कुछ अच्छा करने की जिम्मेदारी पढ़े लिखे लोगों की होती है। लेकिन बड़े अफसोस के साथ कहना पड़ रहा है, कि मैंने जितने भी जागरूक और गणमान्य लोगों से बात की, उन्होंने भी महारानी अवंतीबाई लोधी के इतिहास के बारे में अनभिज्ञता जाहिर की। यहां तक कि लोधी समाज के विद्वान कहे जाने वाले लोगों ने भी बहुत रुचि नहीं दिखाई। हालांकि यह सब किसी ने जानबूझकर नहीं किया। यह सब इसलिए हुआ, कि हम नकली के नशे में इतने सराबोर हो गए, कि असली हमने कब भुला दिआ, होश ही नहीं रहा।

खैर छोड़िए, अब हम अपने गौरवशाली इतिहास के पन्ने पलटते हैं। सैंधव काल में हम झाकतें हैं, तो पाते हैं, कि शिल्प स्थापत्य खेती-बाड़ी के हम लोग जनक हैं। सैंधव काल से विकसित होकर, बौद्ध काल में हम लोग खत्तिय हो जाते हैं, यानी की खेती-वाड़ी करने वाले बहुजन हो जाते हैं। यानी इस देश के मूल निवासी, जिनका डीएनए सैंधव सभ्यता से मिलता है : 10 गणराज्य, षोडश महाजनपद और अशोक कालीन चौरासी हजार (84000) स्तूपों से पता चलता है, कि हमारा साम्राज्य इतना विशाल था, कि कंधार तक फैला हुआ था। जैसे जैसे समय बीता और साम्राज्य का विस्तार हुआ, तो हम खत्तिय लोग...कमेरे लोग, अर्जक लोग यानी अर्जन कर खाने वाले, अलग अलग नाम से बंटते चले गए। जैसे : मौर्य, शाक्य, सैनी, कुशवाहा, जाट, गुर्जर, यादव, कुर्मी, गड़रिया, धनगर, कोली, भंडारी, निषाद, बिंद, राजभर, नुनिहां, तेली, लोधी, कुछ... ऐसे समाज हैं, जो खेती किसानी और पशुपालन से अपना जीवन यापन करते हैं। इसी तरह देश भर में प्रदेशवर अनेक मेहनतकश जातियां हैं जो आज ओबीसी कहलाती हैं। इन्हीं में से कुछ सेवादार हो गए। जो आज के एस.सी., एस.टी. कहलाते हैं। और जब जब इस वर्ग ने शासक बनने कोशिश की, तब एक वर्ग विशेष, जो समय-समय पर मतलब के लिए अपना कहता है, ने ही पीठ में खंजर घोपा। वरना बुंदेलखंड से लेकर भोपाल तक फैला हुआ है लोधी साम्राज्य, का सूरज

ऐसे ही अस्त न हो जाता। वीरांगना अवंतीबाई लोधी को मारना इतना आसान नहीं था। ऐसा भी हो सकता था, कि हम लोग उन्नीस सौ सैंतालीस (1947) के पहले ही आजाद हो गए होते।

भारत में बहुत सी ऐसी महान महिलाओं और महापुरुषों ने जन्म लिया, जो आज वंदनीय हैं। उनकी वीरता हम लोगों को साहस दिलाती है, जब हम मुगलों के गुलाम थे, तब वीरांगनाओं ने मुगलों को हराने के लिए चूड़ियां पहनने की वजाय अपने हाथों में तलवार उठाई। जब हम अंग्रेजों के गुलाम थे, तब भी नारियों ने संघर्ष किया और फिरंगी को खदेड़ने में योगदान दिया। अपना पूरा परिवार देश पर कुर्बान कर दिया। ऐसी ही आजादी की दीवानी थीं, *देश का गौरव महान वीरांगना महारानी अवंतीबाई लोधी।

अवंतीबाई एक छोटी सी रियासत, आधुनिक मध्य प्रदेश, जिला सिवनी, गांव मनकेड़ी के जागीरदार राव जुझार सिंह की बेटी थीं। नर्मदा नदी के किनारे एक सौ सत्तासी (187) गांव के जमीदार जुझार सिंह राव की कोई संतान नहीं थी। आखिरकार वह दिन आ ही गया, सोलह अगस्त अट्ठारह सौ इकत्तिस (16/08/1831), जब लोधी वंश में एक कन्या ने जन्म लिया, शिशु के किलकारियों से पूरा घर गूंजने लगा। सुंदर सा नाम रखा गया *अवंतीबाई*। ममता के कारण जमीदार का मन अब शासन प्रशासन में नहीं लगता था। दिनभर उसी को खिलाते रहते थे। आंगन में अवंती के साथ खेलते, बार-बार घोड़ा बनते और अपनी पीठ पर बैठाकर आंख मिचौली खेलते। मां कृष्णाबाई बोलती, अब सारा प्यार दुलार बिटिया पर ही लुटा देना।

समय बीतता गया, नाग पंचमी का दिन आया, पूरे गांव में चहल-पहल थी, सभी अखाड़े के लिए जा रहे थे। सभी को धर्म सिंह का अखाड़ा देखना था। कोई कसरत कर रहा था, कोई कुश्ती में मगन था। कुछ मुगदर, तलवार लिए अपनी कला दिखा रहे थे।

अखाड़ा खेलते खेलते बादल छा गए, बिजली कड़कने लगी, बादल गरजने लगे, तो चौपाल में सन्नाटा छा गया। सभी लोग वहां से उठकर इधर-उधर भागने लगे। तभी अखाड़े से अवंतीबाई दौड़ती वह बाहर आई, पानी में पूरी तरह भीग गई थी। अपनी इकलौती पुत्री का हाल देखकर जमीदार बोले :

"बेटी तुम कहां गई थी, बारिश में बाल खोले हुए, तुम्हारा स्वास्थ्य बिगड़ गया तो"

अवंती बोली, बापू झूठी बातों से क्यों मुझे डराते हो, मैं कोई मिट्टी की गुड़िया हूं, जो पानी में पिघल जाऊंगी, मैं तो अखाड़े में आई थी। जहां मैंने धर्म सिंह की तलवारबाजी देखी। बापू मुझे बहुत मजा आया, मैं भी तलवार चलाऊंगी बापू...

बापू बोले : "बेटी ऐ सब सीखकर तुम्हें क्या हासिल होगा, यह विद्या काम नहीं आएगी, तुम तो चरखा चलाना सीखो, बेटियां बड़ी होकर मां के साथ रसोई में हाथ बटाती हैं। अखाड़ा और हथियार चलाना तो मर्दों का काम है। नारियां रणभूमि में नहीं जाती, जरा सोचो बेटी, अभी तुम्हारी उम्र 9 वर्ष की है। अभी तो तुम गुड्डे गुड़ियों के साथ में खेलो, तुम्हारी यही शिक्षा है।"

यह सब सुनकर अवंती ने हंसकर कहा : बापू मैं सत्य और समाज के हित में ही तलवार उठाऊंगी। और भारत में बढ़ रहे अत्याचारी दुश्मन का शीश धड़ से उड़ाउंगी। क्या कभी लड़ाई में चरखा काम आएगा, क्या इससे समाज का कल्याण होगा, जरा मुझे समझाओ।

जब वह गोरा अफसर घोड़े से आया था, तब मैं वहां खड़ी थी। उस गोरे में बापू तुम्हें भी धमकाया था, अभी तो बस उसने धमकाया ही था, कभी मौका ऐसा भी आ सकता है, कि आपकी जमीदारी छीन लेंगे। तब तुम उसका क्या कर लोगे। और मैं एकलौती बेटी क्या करूंगी। इसलिए बापू में तलवार चलाना सीखूंगी। एक-एक से बदला लूंगी।

इतने में जागीरदार गुस्से में बोले, " बहुत का बातें करने लगी है, इसको समाज कल्याण देशहित की सीख दे कौन रहा है, इसके नन्हे से दिमाग में पागलपन कौन भरता है, न जाने क्या क्या बकती रहती है।"

जैसे ही जमीदार चुप हुए, तो अवंती फिर बाहों से लिपट कर बोली, बाबू इतना गुस्सा मत किया करो, मेरी बात मान जाओ, अपने घर के पीछे वाली बगिया को साफ करा दो, उसमें एक अच्छा अखाड़ा बनवा दो।

जमीदार बोले : "बेटी, तुम अकेले कैसे अभ्यास करोगी, तुम्हें तलवार चलाना कौन सिखाएगा।"

बापू आप धर्म सिंह से बोलेंगे, तो कभी मना नहीं करेंगे। मुझे सिखाने के लिए जरूर समय निकाल लेंगे। मैं कुश्ती के पैतरे भी सीखूंगी। साथ ही मेरी सहेली है न मुंगिया, वह भी सीखेगी। बापू मैं आपको विश्वास दिलाती हूं, हम दोनों की कला पर आप नाज करोगे। बापू हमारे लिए छोटी छोटी दो तलवारें मंगवा दो, हमें कभी चोट नहीं लगेगी।

अवंती ने यह बात अपनी मां को सुनाकर अपने पक्ष में कर लिया, और मौका पाकर मां और बापू की आपस में इस विषय पर बात भी करा दी। यह सारी बातें बिस्तर पर लेटी अवंती की दादी मां भी सुन रही थीं, जो अवंती से बहुत स्नेह करती थी।

और उन्होंने भी अपने बेटे को आदेश देकर कहा "बिटिया जो कहती है, वह काम करवा दो, यह कोई साधारण कन्या नहीं है। मैं जानती हूं हमारी बेटी बहुत बहादुर है। यह चिंता भी मत करना, कि लोग क्या सोचेंगे"।

दूसरे दिन राव जुझार सिंह ने अखाड़ा तैयार करवा दिया, और फिर दोनों का रोज अभ्यास चलने लगा। तलवारों की गूंज दूर-दूर तक सुनाई देने लगी। तलवार चलाने का कौशल बहुत फुर्ती का था। अवंती का मुकाबला मुंगिया ही नहीं, बल्कि गुरु धर्म सिंह भी नहीं कर पाते थे।

एक दिन अवंती को घुड़सवारी का ध्यान आया, और वह अपने बापू के दरबार में गई, चौपाल भरी हुई थी। वहां जाकर बोली : बापू अखाड़े में एक कमी है, हमको एक अच्छा सा घोड़ा मंगवा दो। मैं घुड़सवारी सीखने और जंगली जानवरों का शिकार करने जाऊंगी। खेतों की रखवाली घोड़े पर बैठकर करूंगी। कभी-कभी शत्रुओं का पीछा करना पड़ता है, तो उनसे बराबरी कैसे कर पाएंगे। उसके लिए तो घोड़ा ही चाहिए।

यह सब बातें सुनकर जमीदार गुस्से में बोले, "परेशान क्यों करती रहती हो, हर दिन नया नया शौक पाले पालती हो। तुम्हें मां का तनिक भी ध्यान नहीं है। अब अखाड़ों का मोह छोड़कर घर गृहस्ती का काम सीखो।"

बापू मुझे आज समझ में आ गया, कि बेटी बेटे में क्या अंतर होता है। नारियों और बेटियों को पुरुषों जैसी आजादी कहां है। नारियां तो चहारदीवारी में कैद रखने के लिए होती हैं।

अवंती की क्रोध वाली बातें सुनकर जमीदार बोले "बेटी तुम नाराज मत हो, मैंने इनकार कब किया है।"

जमीदार की बातें सुनकर पास में बैठे थान सिंह बोले "घोड़ा लाने का काम भई मेरा है, अवंती बेटी को अभी मैंने कुछ दिया भी नहीं है। मेरे पास बहुत सारे घोड़े हैं, उसमें जो घोड़ा पसंद आए वह अवंती बेटी ले सकती है। और हां, बेटा यह घुड़सवारी तुम्हें हमारा भतीजा राखन सिखाएगा।"

अवंती तुरंत साथ में गई और एक घोड़े का चयन कर लिया। और वह घुड़सवारी का अभ्यास करने लगी। अभ्यास करते करते कब 14 वर्ष पूरे हो गए, पता ही नहीं चला।

अस्त्र-शास्त्र, बंदूकों, घुड़सवारी का अभ्यास निरंतर चलता रहा। जमीदार की यह भी अभिलाषा थी, कि बेटी पढ़ना लिखना भी सीख जाए। तब जमीदार ने एक आचार्य से अवंती को शिक्षा देने का आग्रह किया। इस तरह से रोज प्रातः पढ़ते-पढ़ते अवंती की शिक्षा भी पूरी हो गई।

अवंतीबाई मर्दों जैसा वस्त्र पहनकर शिकार करने जाती थी। अपने साथ बंदूक, तलवार छुरी और कटार रखती थी। इसी दिनचर्या के साथ अवंती 16 वर्ष की हो गई। एक दिन अवंती राखन के घर पहुंची और बोली, भैया आज हम शाकाहारी जीव नहीं मारेंगे। सूअर, तेंदुआ, चीता को मारेंगे और हम इसे अपने साथ गांव में ले आएंगे। राखन ने कहा ध्यान रहे,

"अगर थोड़ी सी भी भूल हो गई, तो हम लोग वही मारे जाएंगे"। जंगल के मध्य पहुंच गए, लेकिन वह स्थान बहुत भयानक था, राखन आगे बढ़ता गया और अवंती पीछे रह गई। सामने से तेंदुए ने अचानक राखन पर हमला कर दिया और शरीर पर अपने तीखे नाखूनों से लगातार वार कर दिया। अचानक राखन बंदूक को संभाल नहीं पाया और घोड़े की पीठ से नीचे गिर पड़ा। पीछे से आ रही अवंतीबाई ने राखन को जमीन पर बेहाल पड़ा देखा, तो अवंतीबाई ने तुरंत बंदूक निकाल कर तेंदुए पर चला दी, तेंदुआ वहीं ढेर हो गया। और अवंती अपने घोड़े से उतर कर राखन के पास गई और राखन के जख्मों पर एक कपड़ा फाड़ कर बांध दिया।

राखन बोले : "बहन अगर आज तुम ना होती, तो मेरे प्राण न बच पाते"।

अवंती ने कहा, तेंदुआ की लाश को भी साथ ले चलते हैं। और मरे हुए तेंदुए को घोड़े पर लादकर गांव में आ गई।

मनकेड़ी गांव में जुझार सिंह अपने मित्रों के साथ बैठे हुए थे। अंग्रेजों का शोषण, अत्याचार यही सब बातें चल रही थी।

तभी गांव के बच्चों का शोर सुनकर सभी लोग चौपाल से निकले, तो देखा, राखन और अवंती अपने-अपने घोड़ों से उतर कर नीचे खड़े हैं। रस्सी खोलकर तेंदुए को नीचे गिराया। सभी ने उस मरे हुए तेंदुए को देखा, तो किसी को विश्वास ही नहीं हो रहा है।

अवंती की वीरता के किस्से आसपास के गांव गांव तक पहुंच गये। लोग अवंती को देखने के लिए दूर-दूर से आने लगे।

अवंती अब 17 साल की हो चुकी थी। जुझार सिंह अब अवंती के विवाह के बारे में सोचने लगे थे। और फिर एक दिन वर खोजने के लिए निकल जाते हैं। लेकिन बहुत पहले से ही उनकी इच्छा बेटी का विवाह रामगढ़ के राजघराने में करने की थी। और अब रामगढ़ के राजा लक्ष्मण सिंह के पुत्र विक्रमादित्य भी विवाह योग्य हो गए थे। एक तरह से यह समझ लें, कि वह विक्रमादित्य को अपना दामाद ही मान चुके थे। इसलिए अपने साथियों के साथ में रामगढ़ के किले के बाहर पहुंच गए और अंदर जाने के बारे में सोचने लगे। लेकिन लक्ष्मण सिंह के बहुत बड़े राजा के होने के कारण रामगढ़ किले के अंदर जाने की हिम्मत न जुटा पाए। और मनकेडी़ के लिए वापस चल दिए। फिर रास्ते में उन्होंने सोचा, कि मंडेला के राजा शंकर शाह की रामगढ़ के राजा से काफी घनिष्ठता है। यह सोचकर उन्होंने अपने घोड़े मंडला की तरफ मोड़ दिये, और जा पहुंचे शंकरशाह के महल में।

जुझार सिंह को अचानक आया देख शंकर शाह ने पूछा : "सब खैरियत तो है ना।"

जुझार सिंह ने कहा, कि मैं एक काम से बड़ी उम्मीद से आपके पास आया हूं। मेरी बेटी अवंती बड़ी हो गई है, उसको मैंने बड़े लाड़ प्यार से पाला है। और मैं चाहता हूं कि उसका विवाह रामगढ़ के राजा लक्ष्मण सिंह के बेटे विक्रमादित्य के साथ में हो जाए। इस काम में आपका सहयोग चाहता हूं।

शंकर शाह बोले, "ये तो बहुत नेक काम है, इसमें मैं जरूर आपकी पूरी मदद करूंगा। मेरा बेटा रघुनाथ अभी कहीं गया हुआ है, उसको आ जाने दीजिए। तब तक आप भोजन कीजिए, और आराम कीजिए यहीं पर।"

जब रघुनाथ शाह आये तो शंकर शाह ने कहा, " बेटा तुम अभी रामगढ़ जाओ और विक्रमादित्य के साथ अवंतीबाई की शादी के लिए बात करके आओ।"

पिता की बात सुनकर रघुनाथ शाह रामगढ़ के चल दिए और पहुंच गए रामगढ़।

लक्ष्मण सिंह ने पूछा : "कैसे आना हुआ", रघुनाथ शाह ने कहा :

"मैं सिवनी जिले के मनकेड़ी गांव के जमीदार, राव जुझार सिंह की बेटी अवंतीबाई का रिश्ता विक्रमादित्य के लिए लेकर आया हूं। जुझार सिंह की जागीरदारी में 187 गांव पड़ते हैं। और उनकी बेटी बहुत ही रूपवती और बहादुर है। अगर अवंती का विवाह आपके बेटे के साथ में हो जाए तो बहुत अच्छा रहेगा। मंडला नरेश शंकर शाह की भी सहमति है।"

तब रामगढ़ नरेश लक्ष्मण सिंह बोले : "मैंने भी उस कन्या के बहादुरी के किस्से सुने हैं, जब मंडला नरेश को यह रिश्ता पसंद है, तो मुझे क्यों नहीं होगा। जाओ जाकर कह दो यह रिश्ता हमें मंजूर है।"

रघुनाथ शाह ने मंडला लौटकर अपने पिता और जुझार सिंह को इस सहमति के बारे में बताया, सभी लोग प्रसन्न हुए। इस खुशहाली की खबर चारों तरफ फैल गई। दूसरे दिन जुझार सिंह अपने गांव मनकेड़ी लौटते हैं। और चौपाल में बैठकर इस विवाह और यात्रा का पूरा वृतांत सभी लोगों को सुनाते हैं। सभी का दिल प्रसन्न हो जाता है, सभी लोग बोलते हैं हम अपनी बेटी के विवाह में तन मन धन से सहयोग करेंगे। अवंती की विवाह में कुछ भी कसर नहीं रहेगी और विक्रमादित्य केवल राव जुझार सिंह के दमाद ही नहीं, पूरे गांव के दामाद कहलाएंगे। अवंती की शादी की तैयारियां शुरू हो गई, और अट्ठारह सौ उंचास (1849) का वह दिन भी आ गया।

अवंती की दादी और मां कृष्णा बाई तो बहुत चिंतित हो रही थीं, कि अब मेरी बेटी हम सबको छोड़ कर चली जाएगी।

राव जुझार सिंह ने बहुत सारे अलग-अलग जिलों के मेहमानों को निमंत्रण पहुंचाए। मनखेड़ी के गांव में सागर, दमोह, जबलपुर, मंडला, सिवनी, नागपुर, टीकमगढ़ और पता नहीं कहां-कहां से जमीदार, मालगुजार, राजा, महाराजा, नवाब अपनी-अपनी टोलियों के साथ में, सौगात उपहारों से भरी थालियां अवंती के लिए लाए थे।

अवंती की शादी में उसकी सहेली मुंगिया भी अपने गांव सुकरी बरगी से अपने पति के साथ आई थी और अवंती के लिए बहुत सारे उपहार भी लाई थी।

राजा लक्ष्मण सिंह रामगढ़ राज्य के जमीदार, मालगुजारों को बारात में लाए हुए थे। और मंडला नरेश शंकर शाह अपने बेटे रघुनाथ शाह के साथ मनकेड़ी आकर घराती बने हुए थे।

रामगढ़ के युवराज विक्रमादित्य, जो दूल्हा बने हुए थे, उनकी आयु उस समय 19 वर्ष की थी, और अवंतीबाई इस समय 17 की थी। विवाह की रस्म पूर्ण की गई। विवाह संपन्न हुआ, अवंतीबाई डोली में

बैठी और युवराज घोड़े पर। दादी और मां के आंखों से आंसुओं की धार बहने लगी थी। यह सब दृश्य देख बाराती भी स्वयं को ना रोक पाए और सभी हंसते हुए बारातियों की आंखें भी नम हो गईं।

हाथी पहले से ही तैयार खड़ा था, लक्ष्मण सिंह ने अपने पुत्र और बहू को हाथी पर बैठाया और वापस रामगढ़ जाने के लिए जमीदार से आज्ञा लेने के लिए आगे बढ़े। तभी राव जुझार सिंह ने रोते हुए कहा, "राजा साहब मैंने अपने कलेजे के टुकड़े को तुमको दिया है, आंगन की खुशियां तुमको दी हैं, इसका खयाल रखना।"

राजा लक्ष्मण सिंह बोले, "आप चिंता ना करें, अवंती को मैं अपनी बिटिया के समान रखूंगा।"

इसके बाद बरात लौटकर रामगढ़ वापस पहुंची, बड़ी धूमधाम और राजसी परंपरा से युवराज और अवंतीबाई का स्वागत किया गया।

लक्ष्मण सिंह लोधी का अट्ठारह सौ चौबीस (1824) में राज्याभिषेक हुआ, और मात्र 29 साल की उम्र से ही रामगढ़ राज्य का भार अपने हाथों में संभाला था। आपका एक पुत्र है विक्रमादित्य लोधी, उन्हें प्यार से सभी विक्रमजीत कहते हैं।

राज्य के राजस्व का सातवां हिस्सा मराठों को राकोली यानी कर के रूप में दिया जाता था। एक बार अट्ठारह सौ अट्ठारह ईसवी(1818) में रामगढ़ राज्य में मराठा सत्ता समाप्त हुई, तो रामगढ़ राज्य अंग्रेजों के अधीन आ गया। अंग्रेज राज्य को छीनना तो चाहते थे, लेकिन रामगढ़ के राजा की वीरता के कारण छीन न सके। परंतु कंपनी की अट्ठारह सौ उन्नीस-बीस (1819-20) के बंदोबस्त नीति द्वारा राजा से उवारी यानी पट्टे पर ₹2000 लेना शुरू कर दिया।

रामगढ़ राज्य की आबादी 50 फ़ीसदी गौड आदिवासियों की थी। लोधी जाति कुल 104 परिवार थे। लेकिन यहां के राजा लोधी जाति के थे। अट्ठारह सौ बयालिस (1842) के विद्रोह में लोधी जमीदारों ने भाग लिया था। ब्रिटिश सत्ता के प्रति लोधियों के विरोध की ये विरासत 1857 में और भी तेज हो गई। इसकी अगुवाई का नेतृत्व रामगढ़ की महारानी अवंतीबाई ने किया था।

रामगढ़ के दक्षिण में मंडला नरेश का राज्य, उत्तर में रीवा नरेश का राज्य, पूर्व की ओर अमरकंटक है जहां से नर्मदा नदी का उद्गम स्थल माना जाता है।

एक बार दरबार में राजकुमार और अवंती बाई के बीच में बहादुरी की बातें चलने लगी। राजकुमार अपने को बहुत बड़ा निशानेबाज मानते थे, उन्होंने कहा कि आज अवंतीबाई अपने हाथ में अपनी नथनी पकड़ के खड़ी होगी, और मैं नथनी के बीच से गोली निकालूंगा। अवंतीबाई तैयार हो गई, जबकि सब लोग मना कर रहे थे। वह सामने के मंच पर एक प्रतिमा की तरह अपने दाएं हाथ में नाक की नथनी मजबूती से पकड़कर खड़ी हो गई। राजकुमार विक्रमादित्य निशाना साधने लगे, जैसे ही बंदूक का बटन दबाया, तो गोली नथनी के बीच से बाहर निकलते हुए सामने के खंभे पर जा लगी।

राजा बोले राजकुमार का निशाना अचूक है, मगर उससे भी वीर हमारी बहू रानी है जिसने अपनी जान पर खेलकर ऐसी परीक्षा दी।

रानी के अंदर दया भावना भी कूट-कूट कर भरी हुई थी। एक बार की बात है, एक गरीब महिला चांदनी को जब यह पता चला, कि रानी साहिबा बहुत न्याय प्रिय हैं, तो वह रानी के पास आई और बताया कि गांव के मुखिया ने उसकी जमीन हथिया ली है। अवंती ने तुरंत रामनगरिया गांव के मुखिया मनसुख और पटवारी अशर्फीलाल की सही सही जानकारी, अपनी दासियों को भेजकर पता कर ली।

वह गरीब महिला चांदनी, दरबार में आई, उसने रानी साहिबा को जन्मदिवस की बहुत-बहुत बधाई दी उनके सफल होने के लिए मंगलकामनाएं की। और जब सबके सामने अपने दुख बताया, तो उसको सुनकर राजा बहुत गंभीर हो गए, वह बोले कि,

"ऐसा करने के दुस्साहस किसने किया है, हमारे राज्य में।"

हालांकि इसके पहले अवंती बाई ने रामनगर के मुखिया और पटवारी को बुलवा रखा था, क्योंकि सारी बातें अवंतीबाई ने पहले से पता कर ली थी। मुखिया और पटवारी भी जान गए थे। तो दरबार में पहुंचकर राजा के पैरों में गिर गए, बोले हुज़ूर हमसे गलती हो गई, हमको माफ कर दीजिए। तो यह था अवंती बाई का प्रशासन।

इस घटना ने बहुत से गरीब लोगों में हिम्मत पैदा कर दी। लोग सोचने लगे थे, कि मेरे साथ भी अगर कुछ गलत होगा, तो हम दरबार में चले जाएंगे। रामगढ़ की प्रजा का अपने राजा के प्रति विश्वास और भी बढ़ गया इस फैसले से। राज की प्रजा बहुत खुश हुई। महाराज के पास अपनी शिकायतें लेकर लोग आने लगे। क्योंकि डर खत्म हो गया था। मालगुजार, तहसीलदार, पटवारी जो षड्यंत्र कर रहे थे, उनकी हिम्मत टूट गई, क्योंकि सभी को न्याय मिलने लगा था।

रामगढ़ में ही एक टोला में दो भाई रहते थे, जिनका नाम था चुन्नी पंडित और पुन्नी पंडित। समाज में दोनों भाइयों का बहुत सम्मान था। लेकिन दोनों आर्थिक हप्सी और स्वार्थी स्वभाव के थे। उनके पास 200 बीघा जमीन, आम, महुआ, अमरूद का बाग बगीचा था। ब्याज में पैसा देने के बदले में गरीब प्रजा की जमीन रखवाना, आर्थिक स्थिति अच्छी होने के बावजूद, दूसरे की जमीन हड़पने की मंशा रखते थे।

एक बार उसी टोला का गरीब किसान जिसका नाम है हेमकरन था, उसकी दो बीघा जमीन चुन्नी और पुन्नी पंडित, दोनों भाइयों ने मिलकर कब्जा ठोक दिया, किंतु वह उनकी भूल थी।

खेमकरन जब चुन्नी पुन्नी पंडित के घर पर गया, तो पहले तो आराम से बातें हुई। लेकिन बाद में जब हेमकरन नहीं माना, तो दोनों भाइयों ने धक्के देकर उसे बाहर निकाल दिया। लेकिन जाते जाते हैं हेमकरन ने कहा : "मालिक याद रखना, अब पहले जैसा समय नहीं रह गया है। जमीन तो मैं लेकर ही रहूंगा।"

लेकिन चुन्नी पंडित के दिमाग में तो वही भ्रष्टाचार का विचार था। कि पटवारी से हम कुछ भी करवा लेंगे, लेकिन यह पता नहीं था कि अब समय बदल चुका है। और प्रशासन में महारानी अवंतीबाई का दखल हो चुका है। पटवारी अशर्फीलाल से कहा, कि हेमकरन की जमीन हमारे नाम पर कर दो, आपको मालामाल कर दूंगा। पटवारी ने सीधा मना कर दिया, क्योंकि वह चांदनी वाला मामला भुगत चुका था। और अब इसकी घूसखोरी की हिम्मत ही नहीं रह गई थी। रानी अवंतीबाई का गरीब प्रजा को न्याय देने पर सभी भ्रष्टाचारियों के दिल में उनका खौफ बना रहता था। अवंतीबाई का डर लोगों में ऐसा समाया हुआ था। कि तहसीलदार, मालगुजार, पटवारी, मुखिया द्वारा जो भी जमीने हड़पी गई थीं। वह रानी के न्यायिक नीत की डर के चलते सभी फटाफट लौटा रहे थे। सभी गरीब किसानों को उनकी एक-एक करके अपनी जमीन मिल चुकी थी। यह बात अट्ठारह सौ पचास (1850) की है। महाराजा लक्ष्मण सिंह ने दरबार में पूछा, आखिर हमारे राज्य में ऐसे कितने मामले हैं, जहां गरीब किसानों की जमीन हड़पी गई हैं। जरा इनका पता लगाकर बताया जाए।

तो बताया गया, कि महाराज एक साल के दस्तावेजों के हिसाब से दरबार में 32 मामले आए हैं। महाराज यह सुनकर आश्चर्य चकित हो गए। महाराज ने कहा कि बहुरानी के आने के पहले तो ऐसे मामले बहुत कम आते थे। लेकिन जब से बहुरानी आई हैं। लोगों में आशा का संचार हुआ है, और लोग अपनी शिकायतें लेकर आने लगे हैं।

महाराज, ये तो वे मामले हैं, जो गांव के गांव में ही नहीं सुलझ सके। इससे ज्यादा मामले तो गांव में ही सुलझने लगे हैं। गांव गांव के पटवारी और मुखिया को रानी अवंतीबाई की न्यायिक नीति के बारे में पता लगते ही घबरा गए। और यह चिंता सताने लगी, कि जब अवंतीबाई राज्य की बागडोर संभालेगी तब क्या होगा। प्रजा पूर्ण रूप से अवंतीबाई को महारानी मानने लगी थी।

पुन्नी पंडित मन में ही रानी अवंतीबाई को कोस रहा था। जबसे बहूरानी रामगढ़ में आई हैं, तब से हमारा तो धंधा ही चौपट हो गया है। अब हर कोई दरबार में जाने की धमकी दे रहा है।

सन 1600 मैं ईस्ट इंडिया कंपनी का आगमन भारत में हुआ। यह कंपनी अपने साथ डेढ़ सौ आदमी लेकर भारत आई थी। व्यापार का बहाना करके लॉर्ड डलहौजी भारत में अट्ठारह सौ उन्चास (1849) को आया था। उसने रियासतों को हड़पने की जो नीति बनाई थी, वह ये कि, रियासत के राजा की संतान न होने पर कंपनी रियासत, अपने अधीन कर लिया करती थी। गोद लेने के विरोध में भी कानून बनवा दिया था।

अवंतीबाई : व्यवस्था के अभाव में राज्य की प्रभुसत्ता केवल भय और अनुशासन से ही जीवित नहीं रहती है। उसके लिए आवश्यक है, जनता में सुख, शांति और सुरक्षा की भावना।

युवराज विक्रमादित्य ने अपना मत समझाया : "इसके लिए तो नौजवान सेना का गठन पर्याप्त रहेगा।"

अवंतीबाई : किंतु उससे भी अधिक आवश्यक है, सीमा की सुरक्षा और शत्रुओं से बचाव। पिताजी मैंने सुना है, कि बिठूर का कोई पेशवा है, उसका राज अंग्रेजों ने छीन लिया है।

महाराजा ने बड़े ही दुखी होकर जवाब दिया : "हां बहुरानी... बिठूर एक बड़ा राज्य था, बाजीराव पेशवा की मृत्यु के बाद बिठूर राज्य को कंपनी ने अपने अधिकार में ले लिया, और उनके बेटे नानासाहब को राजकाज चलाने हेतु एक निश्चित रकम निर्धारित कर दी है।

जिसका अर्थ होता है, राजा को पद से न हटाते हुए उस राज्य से जो राजस्व प्राप्त होता है, वह राजा को कंपनी को देना होता था। उसमें से एक निश्चित हिस्सा कंपनी राजा को राज्य चलाने हेतु देती थी। राजा बिना अंग्रेजी शासन की सलाह के, कोई बड़ा निर्णय नहीं ले सकते थे। सतारा, अवध नवाब जैसे कई रियासतों पर कंपनी ने हड़प नीति के तहत आरोप लगाकर राज्य से राजा का पद छीन लिया था।

अवंतीबाई : हमें अपने आप को मजबूत बनाना होगा। पिताजी हमें ईस्ट इंडिया कंपनी के बारे में पूरी जानकारी दीजिए। भाई-भाई में फूट डालना, गोरे-काले करना, पैसों के लालच में खरीद के बारे में जानना। फिर भी किसी ने कंपनी का विरोध नहीं किया।

महाराज : "विरोध तो किया, किंतु गोरों की सेना के सामने इनकी सैन्य शक्ति कम रह जाती है, क्योंकि उनके पास आधुनिक हथियार थे।"

अवंतीबाई : तब हमारे राज्य में भी सैनिकों के भर्ती चालू होनी चाहिए।

और पूरे राज्य में सेना भर्ती का ऐलान कर दिया गया। राज्य में गांव गांव से किसानों के बेटे, मुखिया के बेटे, अच्छी चौड़ी छाती, पूरे ऊंचे कद काठी के हट्टे कट्टे जवान अपने राज्य की रक्षा करने के लिए सेना में भर्ती होने लगे।

इधर पुन्नी पंडित हेमकरन वाले मामले में अपने को अपमानित महसूस कर रहा था। और अवंतीबाई से बदला लेना चाहता था। कुछ ऐसे ही सोच कर पुन्नी पंडित अच्छा सा तिलक लगाकर, घोड़े पर सवार होकर, डिप्टी कमिश्नर के बंगले पर पहुंचा। राज्य में जो भर्ती हो रही थी, उस खबर को बताने के लिए। उसने बताया कि वह रामगढ़ राज्य की गुप्त सूचनाएं लाया है।

कमिश्नर : "वेलकम, वेलकम, मिस्टर टुम यहां कैसे आया।"

पुन्नी : गांव में खेती है और शहर में मकान है, गांव में पूजा करते हैं। राजासाहब तो ठीक हैं, लेकिन उनकी बहू बड़ी चालाक है। अब तो रामगढ़ राज्य में सेना की भर्ती हो रही है।

कमिश्नर : हवाट...मिलिट्री की भर्टी की जा रही है। मेरी इजाजट के बिना रिक्रूटमेंट करने की इजाजट नहीं है। आप हमारी मडड करटे रहिए।

हुजूर जवान पट्ठा, अहीर कहांर, लोधी, गोंड आदिवासी, ऐसी कई जातियों की भर्ती हो रही है।

अब सेना की भर्ती कराना थोड़ा मुश्किल हो गया था, डर भी लग रहा था, कहीं कंपनी से कोई बुराई तो नहीं ली जा रही है।

अवंतीबाई : यदि फौज की भर्ती नहीं होती है, तो दूसरा उपाय करना होगा। वह बचपन से ही अस्त्र-शस्त्र, बंदूक चलाना, घुड़सवारी, तीरंदाजी, इन सभी विधाओं में पारंगत थी। आखिरकार राजा ने फौज की भर्ती का आदेश दे दिया। नगर के सैकड़ों परिवारों की नारियां भी जुड़ गई थीं। राजमहल का मैदान साफ करा दिया गया और वह एक अच्छा अखाड़ा भी बनवा दिया गया। अखाड़े में सभी प्रकार के हथियार जैसे : तलवार, भाला, बंदूकों को अभ्यास के लिए मंगवा दिए गया। और साथ ही सेना के अखाड़े में दांव पेंच का अभ्यास भी चलने लगा।

अवंतीबाई की करीबी दासी और विश्वासपात्र सहेली, जिसका नाम मनकी था, गांव-गांव जाकर महिलाओं को इकट्ठा कर, देश भक्ति, वीर रस, के किस्से सुनाकर महिलाओं को सेना की भर्ती की ओर आकर्षित कर रही थी। वह खुश होकर कहने लगी, "कि देख लेना, एक दिन हमारी विशाल सेना होगी और इस देश से अंग्रेजों की जड़े उखाड़कर फैंक देंगे।"

रामगढ़ में विशाल सेना का गठन हो रहा है, अवंती बाई की प्रशंसा आसपास के पड़ोसी राज्यों में जैसे : रीवा, मंडला, जबलपुर, बुंदेलखंड आदि में हो रही थी। लोधी एवं आदिवासी समुदाय के लोग अपने आप में एक गर्व महसूस करते थे। और रामगढ़ राज्य के सभी लोधी सेना में भर्ती होना चाहते थे।

सासु मां, महारानी यमुनाबाई की तबीयत खराब चल रही थी। और महारानी गठिया रोग के कारण चल बसीं महाराज भी बीमार रहने लगे।

युवराज विक्रमादित्य संगीत, काव्य, रचनाओं में ज्यादा रूचि रखते थे। इस बात से भी महाराज ज्यादा चिंतित थे। महाराज की तबीयत खराब होने की खबर अंग्रेजों को पुन्नी पंडित द्वारा मिल गई। इसलिए कंपनी में रामगढ़ के किसानों पर चार गुना लगान बढ़ा दिया गया।जबकि इस साल वर्षा न होने के कारण, किसानों ने जो बोया था वह भी नहीं मिल पाया था।

अवंतीबाई को जैसे ही पता चला, कि किसानों पर 4 गुना ज्यादा कर लगा दिया गया है। तो उन्होंने महाराज को इस बात की सूचना दी, और महाराज को किसानों का कर राजकोष से भर देने का सुझाव भी दिया। इसतरह से रामगढ़ के किसानों के लिए महाराज और रानी का सम्मान 4 गुना बढ़ गया। ऐसा होने से अंग्रेज पूरी तरह बौखला गए, क्योंकि उनकी पहली चाल अवंतीबाई ने विफल कर दी।

अंग्रेजों के नाकाम होने से उनकी परेशानियां और बढ़ गई। फिर उन्होंने डिप्टी कमिश्नर को मंडला भेजा। उसने रामगढ़ से पुन्नी पंडित को बुलवाया।

पुन्नी ने कहा कमिश्नर साहब अभी अच्छा मौका है। राजा बीमार है तो अपनी सेना लेकर रामगढ़ पर चढ़ाई कर दी जाए। इस तरह से पुन्नी पंडित की गद्दारी से रामगढ़ की गोपनीय बातें अंग्रेजों को पता चल जाती थी। महाराज की तबीयत दिनोंदिन बिगड़ती जा रही थी। महाराज ने अंग्रेजों की दवाई लेने से इनकार कर दिया। सन अट्ठारह सौ पचास (1850) में राजा ने अपने प्रांण त्याग दिए। मंडला से नया डिप्टी कमिश्नर भी आया।

विक्रमादित्य को सिंहासन पर और अवंतीबाई को महारानी के पद पर आसीन कराया गया। मंडला के नरेश शंकर शाह ने विक्रमादित्य के सिर पर मुकुट रखा और राजतिलक किया।विक्रमादित्य ने रामगढ़ की राजगद्दी संभाली।

शंकरशाह ने बताया कि : "राजा बनने की स्वीकृति वायसराय से मिलनी चाहिए, नहीं तो तब तक राजा के पूर्ण अधिकार उसको प्राप्त नहीं होते हैं। यह बात जवाब अवंतीबाई ने सुनी, तो हैरान होकर सोचने लगी। कि यह बात तो महाराज ने कभी नहीं बताई।"

लेकिन ऐसा क्यों ? हमारा राज्य, हमारी प्रजा, हमारा वतन। फिर राजा बनने और राजा के अधिकार इन अंग्रेजों से क्यों लेने पड़ेंगे। महारानी क्रोध में थी। इसका मतलब है कि सभी राजा गुलामी की जिंदगी जी रहे हैं।

रामगढ़ राज्य के नए राजा विक्रमादित्य की रिपोर्ट मंडला के डिप्टी कमिश्नर द्वारा वायसराय को भेजी जा रही थी। वह ऐसी रिपोर्ट भेजना चाहता था, जिससे वायसराय राजकुमार विक्रमादित्य को राजा स्वीकार न करें। वह चाहता था, कि रामगढ़ का राजा एक ऐसा व्यक्ति होना चाहिए, जिससे वह महल की पूरी जानकारी ले सके और धीरे-धीरे रामगढ़ पर अपना कब्जा जमा सके। रामगढ़ राज्य और महल की पूरी जानकारी और गुप्त बातें पुन्नी पंडित के माध्यम से वहां पहुंच जाती थी।

पुन्नी पंडित : "विक्रमादित्य की उम्र पूछी, तो उम्र 25 वर्ष के करीब बताई।"

कमिश्नर : "यह टो कम उम्र का है।"

डिप्टी कमिश्नर ने चाल चलते हुए एक कोरा कागज दिया और पुन्नी से लिखने को कहा। कि रामगढ़ का राजा विक्रमादित्य अभी नाबालिग है, और नीचे हस्ताक्षर करने को भी कहा।

पुन्नी घबराने लगा, उसे पसीना आ गया, वह सोच रहा था कि ऐसा नहीं किया, तो मुसीबत आ जाएगी। उसने डरते हुए हस्ताक्षर कर दिए और डिप्टी कमिश्नर के पैरों तले गिर पड़ा। "माई बाप हमारा नाम गोपनीय रखना।"

डिप्टी कमिश्नर ने अपनी रिपोर्ट बनवाई, जिसमें राजा विक्रमादित्य को नाबालिग बताया। उस रिपोर्ट में पुन्नी पंडित का हस्ताक्षर किया हुआ कागज भी उसी में जोड़ दिया।

डिप्टी कमिश्नर के कार्यालय में पुन्नी पंडित से जो वार्तालाप हो रही थी, वह बातें स्टेनो राम गुलाम सुन रहा था। अपनी मातृभूमि से गद्दारी नहीं करना चाहता था। शाम को समय जब वह अपने घर को लौट रहा था, तभी महल के पास राज दरबार के मंत्री एवं वफादार उमराव सिंह लोधी मिल गये। रामगुलाम ने पुन्नी पंडित से सावधान होने को कहा और सारी बातें विस्तार से बतायीं। उमराव सिंह ने सारी बातें महल में जाकर महारानी अवंतीबाई को बताईं।

महारानी : कंपनी यह कैसे साबित करेगी, कि राजा अभी नाबालिक है।

अभी भी मंडला के नरेश और राव जुझार सिंह महल में थे। रात को भोजन के लिए सभी महल के भोज कक्ष में बैठे वार्तालाप करने लगे।

शंकरशाह : "लखनऊ के नवाब वाजिद अली शाह को कंपनी ने चरित्रहीन बताकर, कमजोर शासक का आरोप लगाकर गद्दी से हटा दिया।"

अंग्रेजों से लड़ने के लिए महारानी हमेशा तैयार रहती थीं, कुछ दिनों बाद अवंतीबाई को दो पुत्र प्राप्त हुए। बड़े पुत्र का नाम अमान सिंह और छोटे का नाम शेर सिंह रखा।

कंपनी की सरकार ने अट्ठारहसौ इक्यावन (1851) में प्रशासकीय रूप से : मंडला, रामगढ़ और सोहागपुर को मिलाकर जिला बना दिया गया। और तहसीलदार की नियुक्ति कर दी। इससे परेशानियां बढ़ गयीं। क्योंकि तहसीलदार को राजमहल की हर बात पता चल जाती थी।

रामगढ़ रियासत अंग्रेजी सरकार को उन्नीस सौ बयालिस (1942) में सालाना दो हजार नौसो अट्ठारह (2918) कर चुकाती थी। अट्ठारह सौ पचपन (1855) में अंग्रेजों ने रामगढ़ रियासत के कामकाज को संभालने के लिए एक मैनेजर नियुक्त कर दिया। इस समय रामगढ़ के राजा विक्रमादित्य पर 18000 का कर्ज था।

इससे विक्रमादित्य का मानसिक संतुलन खराब हो गया। कंपनी सरकार ने उनके सभी प्रकार के अधिकार छीन लिए थे। अंग्रेजी शासन तो यही चाहता था, और उसने विक्रमादित्य को पूर्ण रूप से पागल घोषित कर दिया।

इससे प्रजा भी अंग्रेजों से नाराज हो गई और महारानी तो युद्ध के लिए तैयार थी हीं। रामगढ़ राज के आसपास के जमीदार भी अंग्रेजी शासन से असंतुष्ट थे। मुख्य रूप से सुहागपुर के बघेल जागीरदार गरुड़ सिंह। एक दिन राजा सुबह सैर को निकले, और नदी स्नान करने लगे। कड़ाके की ठंड में स्नान करते रहे और साथ आए युवक से बोले, "क्यों मोहन आज कितनी गर्मी है, मैं तो आज खूब नहाउंगा। मैं पागल नहीं हूं यह दुनिया पागल है। सभी भारतीय ठीक नहीं है, कुछ अंग्रेजों के साथ मिल जाते हैं और देश का नुकसान करते हैं ज्यादातर राज विस्तार में ही लगे रहते हैं दुश्मनों से लड़ने के बजाय, अपने ही भाइयों और कुटुंब के लोगों से लड़ते रहते हैं।"

लेकिन तभी रानी के आने की आहट सुनाई दी। रानी राजा के समीप आ गई, और राजा से विनती की, स्वामी आप कपड़े पहन लीजिए, शीत लहर चल रही है।

"राजा ने कहा आप भी स्नान कर लीजिए"।

रानी अवंतीबाई ने हाथ जोड़कर कहा : हमारा ख्याल छोड़कर, आप दो नन्हे-मुन्ने बच्चों के बारे में सोचिए। राजा की हालत देखकर रानी की चिंताएं बढ़ गई।

इसी समय रामगढ़ में बुरी तरह से अकाल पड़ गया। अकाल के कारण रामगढ़ राज्य में खलबली मच गई।

महारानी गांव गांव जाकर अनाज जमा करने लगीं और जो बड़े किसान अनाज जमा कर रखे थे : जैसे धान, मक्का, जौ आदि। उसे लेकर किसानों को, काम के बदले अनाज दिया, राज्य में तालाब और सड़क बनाने का प्रस्ताव पारित हुआ। और प्रत्येक गांव में राशन की दुकान खुलवाई गई। आदेश दिया कि किसानों को फसल उगाने के लिए बीज और औजार दिए जाएं। और जहां पानी की कमी है, वहां का राजकोष से तालाब बनवा दिए जाएं। अट्ठारह सौ छप्पन (1856) के अकाल से जो स्थिति उत्पन्न हुई थी। उससे निपटने के लिए रामगढ़ में एक सभा का आयोजन किया गया, जिसमें आसपास के छोटे-बड़े राजा, जमीदार, मालगुजार, सभी मिलाकर लगभग 200 सहयोगी मुख्य रूप से शामिल हुए थे।

सभा की अध्यक्षता महारानी ने की थी। सर्वप्रथम समाज सुधार पर भाषण हंडोरिया के राजा किशोर सिंह लोधी ने दिए। कुछ लोगों ने कहा, विधवाओं को दूसरा विवाह करना चाहिए। विवाह करना है या नहीं, यह फैसला महिलाओं पर है। और उनको बेशक नई जिंदगी की शुरुआत करनी चाहिए। यदि किसी बृद्ध की पत्नी का देहांत हो जाए, तो पुरुष दूसरी शादी करते हैं। तो क्या महिलाओं का हक नहीं है, कि वे अपनी जिंदगी का फैसला स्वयं ले सकें। और समाज के ठेकेदार ऐसे लोगों को जाति से बाहर भी नहीं कर पाएंगे। ऐसे लोगों का सम्मान भी होना चाहिए।

रामगढ़ के मंत्री उमराव सिंह लोधी ने प्रभावी भाषण देते हुए कहा : "बेटे-बेटियों को बराबर सम्मान देते हुए पढ़ाना चाहिए। तभी दहेज प्रथा को बंद कर पाएंगे। कोई भी व्यक्ति जाति से पूजनीय नहीं होता है कर्म से पूजनीय होता है।"

अंत में महारानी अवंतीबाई ने कहा : नारियों पर हो रहे अत्याचारों पर रोक लगानी चाहिए। और जो नारियों के लिए घुंघट प्रथा है वह पूरी तरीके से बंद होनी चाहिए। और जो अकाल आया है उससे निपटने के लिए पूरे राज्य में समितियां बनाई जा रही हैं। ताकि कोई भूख से पीड़ित न रहे। यह जिम्मेदारी है हर गांव के मालगुजारों, जमीदारों, मुखिया एवं जागीरदारों की।

महारानी अवंतीबाई कभी-कभी घोड़े पर सवार होकर अपने राज्यों के गांवों का निरीक्षण करने चली जाती थीं। उन्होंने अपनी राज्य में धर्मशालाएं बहुत कम, बल्कि व्यायामशाला, स्कूलों का निर्माण

ज्यादा करवाया। उन्होंने हर वर्ग के लोगों को शिक्षा देने के लिए प्रेरित किया। शिक्षकों के लिए राजकोष से वेतन दिया जाता था। जंगल में गोंड, भील जाति के लोग रहते थे। उनके लिए महुआ, चिरौंजी इत्यादि फल तोड़ने के लिए निःशुल्क छूट कर दी गयी। गाय, बैल, भैंस की चराई भी माफ कर दी गई। मजदूरों को छोटे-छोटे झोपड़े बनाने के लिए बिना ब्याज के धन दिया गया। उनको जंगल से मकान बनाने के लिए लकड़ी काटने की छूट दी गई।

अब रामगढ़ की जनता की जुबान पर एक ही नाम था, महारानी अवंतीबाई लोधी। क्योंकि उन्होंने अपनी प्रशासनिक क्षमता का परिचय करा दिया था।

इधर रामगढ़ में रानी अवंतीबाई क्रांति का आगाज करना चाहती थी। रानी साहिबा सोच रही थीं कि, आसपास की रियासतों के राजाओं, जमीदारों के पास इस समय संदेश पहुंचाया जाए। ताकि उनमें मातृभूमि की खातिर बदले की ज्वाला भड़के। रानी साहिबा ने रामगढ़ के आसपास रियासतों के राजा जमीदार मालगुजार आदि सभी से संपर्क किया। और एक सूची बनवाई। रानी ने सभी नामों की सूची तैयार करवाकर पुड़िया बनवाई। पुड़िया के ऊपर सभी के नाम और पता डलवा दिए थे। पुड़िया में एक पत्र और कुछ सामान भी रखा हुआ था। उस पत्र में लिखा था :

"देश की रक्षा के लिए कमर कसो या चूड़ियां पहनकर, माथे पर सिंदूर लगाकर घर में बैठ जाओ। तुम्हें धर्म, ईमान और देश की सौगंध है। जो यह पत्र बैरी को दे।"

पुड़ियों में सिंदूर और दो चूड़ियां भी रखी हुई थीं। रानी अवंतीबाई के हस्ताक्षर और रामगढ़ के राजा की मुहर भी लगा दी। रानी तो सपना देख रही थीं, वो कौन सा दिन और कौन सी तारीख होगी, जब हम स्वाधीन होंगे। यह पुड़िया रानी साहिबा ने जिस जिस स्थान पर भेजने को कहा था। उन सभी स्थानों पर भेज दी गई थी। तब इन पुड़ियों के संबंध में अंग्रेजी अफसरों को पता चला, तो उनमें खलबली मच गई।

लेफ्टिनेंट जनरल को किसी बड़े खतरे का आभास होने लगा था। और इन चूड़ियों और सिंदूर का कोई अर्थ नहीं निकाल पा रहा था। महारानी के किसी करीबी ने हीं चूड़ियां और सिंदूर की पुड़िया को डिप्टी कमिश्नर वर्डिंगटन तक पहुंचा दिया था। तुरंत अंग्रेजी अफसरों की इस संबंध में बैठक रखी गई, तभी अपनी जेब से वर्डिंगटन ने एक पुड़िया निकाली और सभी के सामने उसको खोला। उस पूड़िया में चूड़ियां और सिंदूर के साथ एक पत्र रखा हुआ देखकर,सभी अधिकारी आश्चर्यचकित रह गए।

लिखा हुआ था : "देश की रक्षा के लिए कमर कसो या फिर चूड़ियां पहनकर मांग में सिंदूर भरकर घर में बैठो।" अंग्रेज किसी भी प्रकार से जोखिम नहीं उठाना चाहते थे। इसलिए अंग्रेजों ने अपने गुप्तचरों को और भी सतर्क रहने के लिए कहा। जिससे उन्हें रामगढ़ के आसपास की पल पल की खबर मिल सके।

राजासाहब मन ही मन सोच रहे थे, कि अब सबसे ज्यादा वक्त हमारी मातृभूमि को बचाने का है। तब हम बिस्तर पर पड़े हुए हैं। महारानी उन्हें हमेशा विश्वास दिलातीं, कि वह जल्द ठीक हो जाएंगे। इस समय रानी साहिबा पर बहुत जिम्मेदारियां बढ़ रही थी। एक ओर पति बीमार, तो दूसरी ओर छोटे-छोटे बच्चे। राज-काज भी देखना है। अंग्रेजों से भी निपटना है। आखिरकार महारानी किस-किस मुसीबत का सामना करें। और जो व्यक्ति ऐसी मुसीबतों का सामना कर ले जाता है, वही व्यक्ति महान बनता है।

अपने राज्य के एक गांव गांव जाकर अपनी योजना गांव के प्रमुख लोगों को बतानी थी। इसके लिए एक और योजना बनाई :

रानी की दासियों को नृत्य, संगीत आता था। उनकी इस योग्यता को देखते हुए, अपनी कुछ दासियों को आदेश दिया कि, अपनी कला से लोगों में अंग्रेजों के विरुद्ध अशांति फैलाने की कोशिश करें। दासियों ने गांव गांव जाकर वेश बदलकर, संगीत के माध्यम से लोगों को इकट्ठा कर, कंपनी सरकार के द्वारा, प्रजा पर किए जा रहे अन्याय, अत्याचार के विरुद्ध सचेत किया। और आने वाली तारीख 31 मई क्रांति के लिए निश्चित की गई है। रानी जानती थीं, कि लोगों का आकर्षण होगा। इसलिए ऐसी योजना बनाई, ताकि इससे जो नृत्य के शौकीन राजा, नवाब हैं, उनके बारे में और अंग्रेजों की गंदी सोच के बारे में जनता को अवगत कराया जा सके। रानी की सहेली और दासी दोनों ने विश्वास दिलाया, कि देश की रक्षा करने में प्राण भी त्यागने पढ़ें, तो भी करेंगे।

राजा विक्रमादित्य के स्वास्थ्य की चिंता रानी को बहुत सता रही थी। दवा, दुआ, कुछ भी काम कर जाए, लेकिन ऐसा नहीं हुआ और राजा विक्रमादित्य 15 मई 1857 को अवंतीबाई और रामगढ़ की प्रजा एवं दो नाबालिक पुत्रों को छोड़कर, हमेशा के लिए पंचतत्व में विलीन हो गए। इसका नाजायज फायदा अंग्रेज उठाना चाहते थे, इसलिए जबलपुर के न्यायाधीश ने रानी अवंतीबाई पर मुकदमा चला दिया।

डिप्टि कमिश्नर वार्डिगटन को आदेश आया, तुम क्या कर रहे। हो। संपूर्ण देश अपने अधीन हो गया है। एक छोटा सा राज्य रामगढ़ हमारे हाथ में नहीं आ रहा। तुम बहुत आलसी हो।

महारानी ने एक दिन अपनी सेना का निरीक्षण किया। और आदेश दिया, अधिक सेना की भर्ती की जाए एवं उसका खर्चा दोगुना कर दिया जाए।

10 मई 1857 को मेरठ में हुए विद्रोह की घटनाओं में, धनसिंह गुर्जर, आशा गुर्जर और महावीरी बाल्मीकि आदि ने अंग्रेजों के छक्के छुड़ा दिए थे। और जब दिल्ली की घटनाओं की खबर जबलपुर पहुंची, तो वहां 19 और 20 मई को अत्यधिक उत्तेजना फैली। 8 जून को झांसी में विद्रोह हुआ, जिसमें जिसमें झलकारीबाई कोरी ने महारानी को का वेश धारण कर, अंग्रेजों से लोहा लिया।

16 जून को जब जबलपुर छावनी में अंग्रेज अधिकारी मिलर अपनी रेजीमेंट का दौरा कर रहा था। तो एक सिपाही ने उसपर अपनी बंदूक से आक्रमण कर दिया। जिससे उसे मामूली सी खरोच आई। उस

समय वह बाल-बाल बच गया, लेकिन इस घटना से विद्रोहियों को हिम्मत मिली। बाद में अंग्रेजी हुकूमत ने उस विद्रोही सिपाही को फांसी की सजा सुना दी। इस घटना से सनसनी फैल गई। अब तो लोग अपने देश के लिए मर मिटने को तैयार थे।

जिला प्रशासन ने साफ तौर पर यह महसूस किया, कि स्थानीय जागीरदारों और माल गुजारो में असंतोष फैल चुका है। मंडला के तहसीलदार ने डिप्टी कमिश्नर को जबलपुर खबर भेजी, कि यहां लूटमार ज्यादा हो रही है। इसलिए मंडला के लिए और पुलिस भेजी जाए। रामगढ़ में भी हालत बिगड़ चुके हैं।

जब कोई समाज के लिए स्वयं समर्पित हो जाता है तो उसके कई अन्य सहयोगी हो जाते हैं। निरंतर कवि सम्मेलन करके लोगों में क्रांति की शुरुआत करने वाले शंकरशाह और उनके पुत्र रघुनाथशाह को भी देशभक्ति का जुनून छाया था।

जबलपुर में 52 वीं बटालियन का कमांडर लेफ्टिनेंट बहुत अत्याचारी था। इस अत्याचार को रोकने के लिए शंकरशाह और उनके पुत्र रघुनाथशाह ने सभी किसानों के साथ मिलकर लड़ने का ऐलान किया। इसी विद्रोही प्रवृत्ति के चलते इन दोनों बाप-बेटों को भरी तोपों के सामने बंधवाकर उड़वा दिया।

राजकाज की सलाह लेना हो, कोई बड़ा निर्णय लेना हो, तो महारानी उन्हीं से पूछ कर किया करती थीं। इससे अवंतीबाई को बहुत आघात लगा। रानी अवंतीबाई को गोंड जाति के लोग बहुत सहयोग कर रहे थे। इनकी सेना में सबसे ज्यादा सैनिक गोंड जाति के ही थे।

महारानी ने सोच लिया था, कि अब जो होगा देखा जाएगा। पर इन अंग्रेजों को देश से उखाड़ फेंकेगें। तब रानी ने उमराव सिंह से कहा :

"मैं यह लड़ाई इस देश की रक्षा के लिए, आने वाले लोगों के लिए लड़ रही हूं। अब धीरे-धीरे रानी के आदेशानुसार हर जगह आक्रमण भी शुरू होने लगे थे।

अंग्रेजों की ओर से नियुक्त रामगढ़ का कामकाज संभालने वाले तहसीलदार ने सोचा, कि अब यहां से निकलना ही पड़ेगा। वरना पता नहीं कब यहां भी आक्रमण हो जाए। 26 सितंबर 1857 को रामगढ़ में रुके सरकारी कर्मचारियों को भी रामगढ़ छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा। वहां के खजाने को भी महारानी के लोगों ने अपने कब्जे में कर लिया था।

28 तारीख की शाम बिछिया में महारानी के साथ मिलकर कई जाति के लोगों ने गांव पर आक्रमण कर दिया। जैसे अंग्रेज कर्मचारियों को यह पता चला, कि महारानी की एक टुकड़ी बिछिया की ओर आ रही है। तो सब दहशत में ताला लगाकर भाग गए। अब बिछिया ग्राम और वहां के सभी दफ्तरों पर रामगढ़ का कब्जा हो गया। इस तरह क्रांति करते-करते रानी आगे बढ़ती जा रही थी। और वह अपनी नीतियों से छोटी बड़ी रियासतों को अंग्रेजों के विरुद्ध सचेत करती जा रही थी। पूरे भारत के लोग महारानी के

साथ कंधे से कंधा मिलाकर युद्ध लड़ने के लिए अपनी ओर से जान तक निछावर करने के लिए तत्पर रहते थे। रानी की सेना में भी बढ़ोतरी हो रही थी।

बिछिया ग्राम जीतने के बाद रानी का रूख नारायणगढ़ की ओर हो गया। 4 अगस्त 1857 को यहां से भी अंग्रेजों को मार भगाया। और जबलपुर रोड पर भी कब्जा कर लिया। अब अंग्रेजों को जबलपुर से रायपुर जाने वाले मार्ग पर सामान ले जाने और ले आने की समस्या होने लगी थी।

छापामार युद्ध रानी को भली-भांति आता था। छापामार युद्ध का सिद्धांत होता है कि मारो और भाग जाओ। यह सहसा आक्रमण करते हैं, और थोड़ी दूर पर प्रकट हो जाते हैं। यह अपने पास बहुत कम सामान रखते हैं।

महारानी और उसके सहयोगी जंगलों में थे। उन्होंने अंग्रेजी सेना पर अब छापामार युद्ध शुरू कर दिया था। अंग्रेजों को मारकर, उनका नुकसान कर जंगलों में वापस चली जाती। रानी अपने आसपास की व्यवस्था पर कब्जा करती जा रही थी। लेकिन छापामार युद्ध से रानी अवंतीबाई की सेना घटने लगी थी। क्योंकि उन्हें रात में जागना पड़ता था, और दिन में व्यस्त हो जाते थे।

इसके बाद रानी अवंतीबाई की सेना और उनके सहयोगी कुंडम नगर में पहुंचते हैं। अब रानी के पास सैनिकों की संख्या बढ़ चुकी थी, क्योंकि अंग्रेजों से लोहा लेने के लिए उनके दल में राज्य के किसान भी मिलते जा रहे थे। कुंडम जाकर अंग्रेजों के सिपाहियों पर आक्रमणकर अधिकार कर लिया।

एक बार रानी साहिबा और सहयोगियों का काफिला मायके मनकेड़ी पहुंचता है। तो वहां के नगरवासियों ने महारानी का फूल मालाओं से स्वागत किया। महारानी अब पूरे भारत में प्रसिद्ध हो गई थीं। गांव वाले बहुत खुश थे, कि 1857 क्रांति की महानायिका महारानी हमारे गांव की हैं।

उमराव सिंह ने कहा, कब हमारा लक्ष्य डिंडोरी पर अधिकार करना होगा। और महारानी ने डिंडोरी पर आक्रमण कर दिया। यहां दोनों के बीच भयंकर युद्ध हुआ, गोला बारूद भी चला, अंग्रेजों को वहां से भागना पड़ा। डिंडोरी पर कब्जे से अंग्रेज निराश हुए।

यह क्या हो रहा है, जिन रास्तों पर हमारा अधिकार था, रानी ने एक-एक करके उन सभी रास्तों को अपने अधिकार में ले लिया।

जब महारानी ने खेरी ग्राम में प्रवेश किया, तो यहां भी जोर शोर से स्वागत किया गया। मंडला को छोड़कर लगभग पूरा जिला स्वतंत्र हो चुका था। मंडला पर भी आक्रमण हो ही गया, कुछ अंग्रेज मारे गए और कुछ घायल हुए। इसी तरह महारानी की सेना के भी कुछ घायल हुए और मारे गए। वार्डिंगटन को पूरा विश्वास था, कि मंडला की जनता उसका साथ नहीं देगी। बल्कि महारानी का साथ देगी। इसलिए पूरी सेना लेकर गौर नदी के किनारे पहुंचा। दूसरे दिन फिर रानी ने अंग्रेजी सेना पर हमला कर दिया। हमला इतना भयंकर था कि गोलियों की आवाज पूरे इलाके में सुनाई दे रही थी।

यह युद्ध 24 नवंबर को हो रहा था, और आगे बढ़ते बढ़ते वार्डिंगटन के पास पहुंच गई। रानी ने तलवार घुमाकर वार कर दिया। घोड़ा पिछल गया। जिससे घोड़े की गर्दन कट गई। और वर्डिंगटन धरती पर गिर पड़ा। रानी उसे मारना चाहती थी, किंतु उसके सिपाहियों ने रानी से क्षमा याचना करके उसे बचा लिया। और रानी ने भी वर्डिंगटन को जीवनदान दे दिया, जा जी ले अपनी जिंदगी। रानी दूर खड़ी हो गई।

वर्डिंगटन पूरी तरह से घबरा गया और वहां से उठकर अपने पड़ाव में आ गया। उसने अपने सैनिकों से कहा :

"महारानी बहुत ही पराक्रमी है। हम लोग सामने से मुकाबला नहीं कर सकते हैं। रानी को धोखे से मारना होगा। और वार्डिंगटन 26 नवंबर को मंडला से सिवनी भाग आया। मंडला से तहसीलदार के भाग जाने पर पूरा जिला महारानी के हाथों में लग गया। लगभग रानी ने पूरा जिला ही स्वतंत्रता करा लिया था।"

वर्डिंगटन सोच रहा था, कि कब मंडला वापस लौटे। क्योंकि रानी अवंतीबाई को वह हर हाल में पराजित करना चाहता था।

1 जनवरी 1858 की रात वह देवरी के विद्रोही आशादीप जाट को बंदी बनाने के उद्देश्य रवाना हुआ, लेकिन वह समय से नहीं पहुंच सका और न ही बंदी बना सका। इससे बौखलाकर आशादीप जाट का घर ही जला दिया।

अब रानी अवंतीबाई का विद्रोह रीवा जिले में पहुंच चुका था। वर्डिंगटन ने रीवा के कुछ ठाकुरों को खबर भेजी, कि वहां के सभी रास्ते बंद कर दिए जाएं। ताकि विद्रोही वहां से भागने न पाएं। और जो व्यक्ति इनको पकड़ेगा, उसे हमारी कंपनी की सरकार द्वारा उचित पुरस्कार दिया जाएगा।

आखिरकार वर्डिंगटन रामगढ़ पहुंच गया। रामगढ़ का किला बहुत मजबूत बना था। इसमें बाहरी शत्रु किसी भी प्रकार से प्रवेश नहीं कर सकता था। उसने किले के बाहर तोपों को खड़ा करवा दिया, और अपने सैनिकों से कहा कि जब तक हम आक्रमण करने का आदेश न दें, तब तक कोई आक्रमण नहीं करेगा।

रीवा आक्रमण से लौटने के बाद महारानी अपने किले में ही थीं। रानी को जैसे ही पता चला, कि किले के बाहर वार्डिंग्टन और उसकी सेना ने चारो ओर से घेर लिया है। तो उन्होंने किले से जाने से जाने का निर्णय लिया। जैसे ही वर्डिंगटन किले के दरवाजे पर पहुंचा, सिपाहियों को किले पर तोपें चलाने का आदेश दे दिया।

महारानी अपने दोनों पुत्रों और सेना सहित पिछले दरवाजे से जंगल की तरफ निकल गईं। जब तोपों से दरवाजे टूटे, तो अंग्रेज किले के अंदर घुसे। लेकिन कोई नहीं मिला।

महारानी ने कुछ दिन तक अंग्रेजों से छापामार युद्ध भी किया। लेकिन सैनिकों की संख्या कम होने के कारण सैनिक हारने लगे थे। वर्डिंगटन को फिर पता चला कि, महारानी देवहार गढ़ के जंगलों में है। तो अब उसने रानी को घेरने की योजना बनाई। और पूरी रणनीति के साथ अपनी सेना और रीवा नरेश ने जो सेना दी थी, उसके साथ आगे बढ़ा। महारानी ने अपने दोनों पुत्रों को रामगढ़ के पास अमरपुर गांव के एक आदिवासी परिवार में भिजवा दिया था।

आखिरकार पूरी योजना के अनुसार महारानी और उनकी सेना को घर ही लेता है। भारत जैसे महान देश की वीर नारी ने भागना तो सीखा ही नहीं था।

"इस फिरंगी को उस दिन तो हमने जीवनदान दे दिया था। पर आज यह हमारे हाथों से बचेगा नहीं।"

देवहार गढ़ की पहाड़ियों में बंदूक ही बंदूक गूंज रही थी।

तब एक बार वर्डिंगटन ने युद्ध को रोका और कहा,

"महारानी जी अगर आप चाहें तो अपने आपको और अपनी सेना को समर्पण कर दें। इससे आपकी जान भी बच जाएगी, और आपको कोई नुकसान भी नहीं पहुंचाएंगें। रामगढ़ के किले का जो नुकसान हुआ है। उसकी मरम्मत हमारी कंपनी की सरकार कराएगी।"

रानी यह सब सुन रही थी। तब रानी ने कहा : "मैं अपनी मातृभूमि के लिए मर जाऊंगी, मगर समर्पण नहीं करूंगीं। ए कायर फिरंगी युद्ध कर मुझसे।"

फिर से युद्ध शुरू हो गया। महारानी भी घोड़े पर सवार होकर तलवार से युद्ध लड़ रही थी। जिनके पास बंदूकें थी वह बंदूको से लड़ रहे थे। गर्मी का समय था। धीरे-धीरे वर्डिंगटन रानी के समीप आ गया और उसने गोली चला दी। रानी जिस हाथ में तलवार लिए थी, गोली उसी हाथ में जाकर लगी। महारानी के हाथ से तलवार छूट गई और रानी घोड़े से नीचे गिर गई। लेकिन तब भी महारानी ने अपने दूसरे हाथ से तलवार उठाई, और जमीन पर रहते हुए भी लड़ती रहीं।

जब तक वर्डिंगटन रानी के पास आता, तब तक महारानी ने रानी दुर्गावती की तरह, अपने ही हाथों से कटार अपने पेट में घोंप ली। क्योंकि महारानी अपना पवित्र शरीर इन अत्याचारियों के हाथ में नहीं लगने देना चाहती थीं।

वार्डिंगटन ने अपनी सेना को युद्ध रोकने को कहा। चारों तरफ सन्नाटा छा गया। बिजली कड़कने लगी। मौसम अचानक से गमगीन हो गया। महारानी की सांसे अभी चल रही थीं।

वार्डिंगटन की आंखों में भी आंसू आ गए :

"महारानी आप सचमुच में एक देशभक्त हो, समाज हितार्थ नारी हो। आने वाली पीढ़ियां आपका गुणगान करेंगी। मुझे याद है महारानी, आपने एक बार जीवनदान दिया था, सेल्यूट्स।"

(यह याद आते ही वर्डिंगटन ने रानी को सलूट किया)

चारों ओर सैनिक खड़े हुए थे। सभी की आंखें नम थीं। महारानी की भी अंतिम सांसे चल रही थीं।

महारानी वर्डिंगटन से बोलीं :

"प्रजा और किसान निर्दोष हैं, उनपर तुम किसी भी प्रकार से अत्याचार मत करना। देश के लिए लड़ जाना, मिट जाना। हमारा सभी लोगों का साथ यही तक था।"

धन्य हो आप महारानी : जय हो तुम्हारी मर्दानी

(जिस तलवार से रानी ने अपने आप को मारा था वह आज भी डिंडोरी जिला प्रशासन(म.प्र.) के संरक्षण में रखी हुई है)

(कृपया इसका प्रिंट निकलवाकर पढ़ें और पढ़वाएं)

-:समाप्त:-

सुगत सांस्कृतिक, शैक्षिक एवं सामाजिक संस्था,
लखनऊ (उ.प्र.), दिनांक : 16.08.2020
अभिनेत्री : अनामिका सिंह
लेखक : ए. के. सिंह
मोबाइल : 7355175480